ईमानदार लकड़हारा (bûcheron)

बहुत समय पहले की बात है। एक गांव में एक लकड़हारा रहता था। रोज़ सुबह जल्दी उठकर पास के जंगल में लकड़ियां काटने चला जाता। दिन भर वहां काम करता और देर शाम को थका–मांदा अपने घर लौटता। हफ़्ते में दो बार पास के इलाकों में जाकर ये लकड़ियां बेचता और उनकी बिक्री से जो थोड़े बहुत पैसे मिलते, उन्हीं से अपना और अपने परिवार का काम–काज़ चलाता।

एक दिन की बात है। लकड़हारा जंगल में तालाब के पास एक पेड़ पर चढ़कर टहनियां काट रहा था। अचानक उसकी कुल्हाड़ी उसके हाथ से छूटी और पानी में जा गिरी।

बेचारा लकड़हारा परेशान। उसकी कुल्हाड़ी ही उसकी आमदनी का एकमात्र ज़रिया थी। उसी की मदद से वह अपना और अपने परिवार का पेट भरने के लिए पैसे जुटाता था। बिना उसके वह अपना काम कैसे कर सकेगा ? अपने घर का खर्चा चलाने के लिए पैसे कैसे कमा पाएगा ? यही सोचता हुआ बेचारा पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा।

तालाब में एक देवता रहते थे। उन्होंने इस घटना को होते हुए देख लिया था। रोते हुए लकड़हारे को देखकर उन्हें उसपर तरस आ गया। पानी से निकलकर वे लकड़हारे के पास पहुंचे और उससे पूछा : क्या हुआ ? तुम क्यों रो रहे हो ?

लकड़हारा पहले तो ज़रा घबराया, फिर हिम्मत करके उसने उन्हें सारी बात बता दी।

देवता ने पानी में डुबकी लगाई और कुछ ही देर बाद फिर बाहर आए। उनके हाथ में चमकती हुई सोने की एक कुल्हाड़ी थी। पूछा : देखो, क्या यही है तुम्हारी कुल्हाड़ी ?

लकड़हारे ने कुल्हाड़ी की ओर नज़र डालते हुए जवाब दिया : महाराज, मैं तो बस एक गरीब लकड़हारा हूं। भला मेरे पास इतनी महंगी सोने की कुल्हाड़ी कैसे आ सकती है ?

देवता ने उसकी बात सुनकर एक बार फिर पानी में डुबकी लगाई। जब वे बाहर निकले, तब उनके हाथ में चांदी की एक चमचमाती हुई कुल्हाड़ी थी। क्या यह तुम्हारी कुल्हाड़ी है, उन्होंने लकड़हारे से पूछा।

नहीं, महाराज, यह तो चांदी की है। यह भी मेरी नहीं है, लकड़हारे ने दुखी होकर कहा।

देवता मुस्कुराए और एक बार और पानी में चले गए। इस बार जब वे बाहर आए, उनके पास एक पुरानी लकड़ी की कुल्हाड़ी थी।

लकड़हारा उसे देखते ही खुशी से चिल्ला उठा : मेरी कुल्हाड़ी ! हां, हां, यही है मेरी कुल्हाड़ी !

गरीब आदमी की ईमानदारी देखकर देवता बहुत खुश हुए। उससे बोले : मैं तुम्हारी सच्चाई से बहुत खुश हूं। यह लो, आज से ये तीनों कुल्हाड़ियां तुम्हारी हुईं। ऐसा कहकर उन्होंने लकड़ी के साथ–साथ सोने और चांदी की कुल्हाड़ियां भी लकड़हारे को दे दीं और गायब हो गए।

लकड़हारा खुशी–खुशी अपने घर वापस चला आया। उसे अपनी ईमानदारी का फल मिल गया था।